एक दिलचस्प पड़ाव

रश्मिकांत श्रीवास्तव

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय की दो दशक की यात्रा पर एक गौरतलब दस्तावेज है दो दशक एक सफर एक पड़ाव। विश्वविद्यालय की शक्ल में वर्ष 1990 में भोपाल में हुई एक छोटी सी शुरुआत अब काफी विशाल रूप ले चुकी है। यह संयोग ही है कि देश के मीडिया जगत में इन्हीं बीस सालों के दौरान सारे बड़े बदलाव आए हैं। आर्थिक उदारीकरण की नीतियां भी नब्बे के दशक के आरंभ में लागू हुईं, जिसके चलते धीरे-धीरे भारत में हर स्तर पर परिवर्तन दिखाई दिए। मीडिया जगत में जो बदलाव पिछले साठ साल में नहीं हुए थे, वह इन्हीं डेढ़-दो दशकों में उभरकर सामने आए। चौबीस घंटे के न्यूज चैनलों का सतरंगी संसार इसी दौरान छोटे पर्दे पर झिलमिलाया और अखबारों के संस्करणों का फैलाव भी अंतरप्रांतीय स्तर पर इसी दौरान बहुत तेज गति से हुआ। अखबार भी पहले से ज्यादा भारी और रंगारंग हुए। पठनीयता और दर्शनीयता में बदली। मीडिया में प्रतिस्पर्धा तेज हुई। इंटरनेट की आमद ने संभावनाओ के नए दरवाजे ही नहीं खोले, मीडिया में बदलावों की गति और तेज कर दी और सरकारी रेडियो के एकाधिकार को भी निजी एफएम चैनलों की श्रृंखला ने देश भर में चुनौती खड़ी की। विश्वविद्यालय इन बदलावों का साक्षी है और यहां से निकले विद्यार्थी इन बदलावों के बीच से ही होकर गुजरे हैं।

एक सूत्र में बांधने की कोशिश : पत्रकारिता और जनसंपर्क के एक-एक वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रमों के साथ यह विश्वविद्यालय स्थापित हुआ था, जिसमें 20-20 विद्यार्थियों के चयन के लिए कठिन प्रवेश परीक्षा होती थी। अब तक यहां से कोर्स करके निकले विद्यार्थी देश के हर मीडिया संस्थान में सक्रिय हैं। जो शुरूआती सत्रों से निकले हैं, उन्हें फील्ड में काम करते हुए 15-17 साल हो चुके हैं। अपने कठिन संघर्ष, प्रतिभा और धैर्य के बूते पर इनमें से अधिकतर वरिष्ठ पदों पर हैं, जिनकी नीति-निर्धारण में भी अहम भूमिका है। अनेक विद्यार्थी ऐसे हैं, जिन्होंने प्रबंधन और लेखन में उल्लेखनीय कीर्तिमान स्थापित किए हैं। सभी टीवी चैनलों, अखबारों, रेडियो, न्यूज एजेंसियों, वेब पोर्टल और जनसंपर्क विभागों में वे काम कर रहे हैं और इन संस्थानों में वे एक तरह से विश्वविद्यालय के चेहरे हैं। दिल्ली, मुंबई, रायपुर, भोपाल और इंदौर समेत कई शहरों में बिखरे इन विद्यार्थियों के अनुभव मीडिया के संसार की अंदरुनी कहानी बयान करते हैं। यह दस्तावेज इन सबको विश्वविद्यालय के एक सूत्र में बांधने की कोशिश है।

बदलावों की दिलचस्प झलक : दस्तावेज का शीर्षक 'दो दशक, एक सफर-एक पड़ाव' विश्वविद्यालय के इसी सफर का एक छोटा सा प्रतिबिंब पेश करता है, जिसके साक्षी यहां से निकले सैकड़ों विद्यार्थी हैं। इस दस्तावेज में देश के विभिन्न शहरों और तकरीबन हर समाचार माध्यम में सक्रिय 29 वरिष्ठ विद्यार्थियों के अनुभव संकलित किए हैं। इनमें दस-दस विद्यार्थी तो पहले और दूसरे सत्रों के हैं, जिन्हें पहली बार एकत्रित रूप में सामने लाने की कोशिश हुई है। बाकी नौ विद्यार्थी बाद के सत्रों के हैं, लेकिन मीडिया में काम का सबका न्यूनतम अनुभव डेढ़ दशक का है। ढाई सौ पेज का यह दस्तावेज मीडिया में आए बदलावों की दिलचस्प झलक दिखाता है। विश्वविद्यालय से डिग्री लेकर मीडिया संस्थानों के दरवाजे पर दस्तक देने के बाद

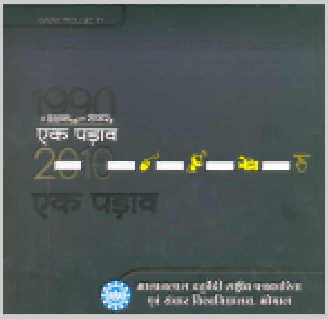

'दो दशक, एक सफर-एक पड़ाव'
प्रधान संपादक : प्रो बृजकिशोर कुठियाला
प्रकाशक : माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल
मूल्य : दो सौ रुपए, पृष्ठ संख्या : ढाई सौ, प्रथम संस्करण : 2010

कौन कहां गया और कैसे अनिश्चितताओं से भरी इस दुनिया में अपनी जगह बनाई, इसकी उम्दा और पठनीय कहानियों का यह संकलन मीडिया में आ रही नई पीढ़ी के लिए जीवंत सबक है। कई विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय की स्थापना के समय की अपनी हॉस्टल की जिंदगी की खट्टी-मीठी यादों को ताजा किया है। किताब के दूसरे खंड मध्यप्रदेश मूल के जाने-माने वरिष्ठ पत्रकारों व संपादकों की टिप्पणियां भी संकलित की गई हैं। इनमें स्वतंत्र राजनीतिक विश्लेषक, सुबह व शाम के दैनिक अखबार, टीवी चैनल, वेब पोर्टल के हिंदी-अंग्रेजी माध्यमों के संपादक भी शामिल हैं, कलम की दुनिया में जिनका सुदीर्घ अनुभव रहा है।

हर क्षेत्र में अग्रणी हैं : इंजीनियरिंग और मेडिकल कॉलेजों में पूर्व विद्यार्थियों को जोड़ने की एक पुरानी परंपरा रही है, लेकिन दशकों पहले पढ़कर निकले विद्यार्थियों के ऐसे अनुभव संकलित करने की यह कोशिश शिक्षण संस्थानों के स्तर पर कम ही हुई है। विश्वविद्यालय ने इस दस्तावेज के जरिए अपनी उपयोगिता भी स्थापित की है, क्योंकि मीडिया में लगातार बदलती और बढ़ती तकनीक के प्रभावों के दौर में शिक्षण और प्रशिक्षण की अहमियत भी बढ़ाई है। यही वजह है कि इन्हीं डेढ़-दो दशक में देश भर में मीडिया के शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थानों की एक लंबी श्रृंखला देश में उभरकर सामने आई है। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय को एशिया में हिंदी पत्रकारिता का पहला विश्वविद्यालय कहलाने का गौरव हासिल है। यहाँ से निकले विद्यार्थियों ने एक तरह से इस गौरव को बढ़ाया ही है, क्योंकि परंपरागत पत्रकारिता में इन विद्यार्थियों ने अपने-अपने स्तर पर नए जमाने की जरूरतों को पूरा किया है। ईमानदारी, कठोर परिश्रम और प्रतिभा के बूते पर उन्हें जहाँ भी मौके मिले हैं, अपनी छाप छोड़ने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी है। इस दस्तावेज में दर्ज अनुभवों से पता चलता है कि अपनी बेहतरीन रिपोर्टिंग के जरिए उन्होंने व्यवस्था में बदलाव की दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिए हैं और कुशल संपादन के बूते पर अखबारों व टीवी चैनलों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। कई विद्यार्थियों ने लेखन के क्षेत्र में अपनी कलम की कारीगरी दिखाई है। कुछ विद्यार्थी कुशल नेतृत्वकर्ता के रूप में भी उभरकर सामने आए हैं। वे मीडिया की हर विधा में अग्रणी भूमिका में हैं।

व्यावहारिक ज्ञान के 29 पाठ : चुनिंदा 29 विद्यार्थियों के अनुभव नई पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए व्यावहारिक ज्ञान के 29 पाठ हैं, जिनसे उन्हें मीडिया के धरातल की झलक दिखाई देगी। इस लिहाज से यह एक अकेला उपयोगी दस्तावेज है। एक कमी अखरने वाली है और वो यह कि इसमें कई और विद्यार्थियों के अनुभव भी संकलित किए जा सकते थे, जो शुरूआती दौर में विश्वविद्यालय से पढ़कर निकले। हालांकि विश्वविद्यालय के स्तर पर यह प्रयोग पहली बार किया गया है, इसलिए उम्मीद की जा सकती है कि यह आखिरी नहीं होगा। उम्मीद की जानी चाहिए कि इस दस्तावेज के दूसरे, तीसरे और चौथे पड़ाव भी आने वाले सालों में नजर आएंगे, जिनमें उन विद्यार्थियों के बारे में जानने को मिलेगा, जो बाद के सत्रों में यहां से निकले और देश भर में सक्रिय रूप से कार्यरत् हैं और जिन्होंने बेहद कम समय में अपना स्थान बनाया है।

रजत जयंती के लिए मील का पत्थर : बेशक यह काम सरल नहीं है। लंबी योजना, समन्वय और तय समय सीमा में उसे पूरा करने की तैयारी से ही यह संभव हो सकता है, लेकिन विश्वविद्यालय के ऊर्जावान स्टाफ की टीम और जागरूक विद्यार्थियों को इस दस्तावेज से प्रेरणा लेकर देश भर में काम कर रहे अपने विद्यार्थियों का एक रिकॉर्ड अवश्य तैयार करना चाहिए ताकि ऐसे अनुभवों को और बटोरा जा सके। यह रिकॉर्ड सत्रवार भी बनाया जा सकता है और विषयवार भी। मसलन टीवी चैनलों में कार्यरत् विद्यार्थियों का अलग रिकॉर्ड और प्रिंट में कार्यरत् विद्यार्थियों का अलग रिकॉर्ड। इस बहाने विश्वविद्यालय का भी जीवंत संपर्क अपने प्रतिभाशाली विद्यार्थियों से कायम होगा और नए विद्यार्थियों को एक तैयार निर्देशिका भविष्य में उपलब्ध होगी। यदि विश्वविद्यालय इस दिशा में आगे बढ़ता है तो यह दस्तावेज मील का पत्थर साबित होगा। स्थापना के दो दशक के बहाने प्रकाशित इस दस्तावेज ने पांच साल बाद विश्वविद्यालय की रजत जयंती वर्ष के लिए एक अनुकरणीय आइडिया परोसा है, जो सिर्फ इसी विश्वविद्यालय के लिए नहीं बल्कि ऐसे हर शिक्षा परिसर के लिए उपयोगी हो सकता है।

तीस साल बाद : छपे हुए शब्द की अहमियत को रेखांकित करते हुए यह भी सच है कि ऐसे दस्तावेजों का जितना महत्व वर्तमान में है, उससे ज्यादा भविष्य में। कल्पना कीजिए, तीस साल बाद जब कभी विश्वविद्यालय की स्वर्ण जयंती मनाई जाएगी, तब इस दस्तावेज का क्या महत्व होगा? इनमें जिन विद्यार्थियों ने अपने अनुभव लिखे हैं, वे तब उम्र के सात दशक पार होंगे। एक पूरी पीढ़ी अनुभव और आयु के क्षितिज पर होगी। तब तक बदलावों की रफ्तार और तेज हो चुकी होगी और एक नई दुनिया ही सामने होगी। उस वक्त की हाईटैक पीढ़ी के लिए यह दस्तावेज एक कीमती धरोहर ही होगा। वैसे भी, आज सौ-पचास साल पहले की ऐसी अनुभवपूर्ण किताबों की अहमियत भी तो हमारे लिए किसी धरोहर से कम नहीं होती!